चौंसठ ऋद्धि सिद्धि विधान

रचयिता : दिगम्बराचार्य श्री सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

चौंसठ ऋद्धि सिद्धि विधान

रचयिता

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

कृति	:	**चौंसठ ऋद्धि सिद्धि विधान**
शुभाशीष	:	पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज
कृतिकार	:	परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज
संस्करण	:	षष्टम, अक्टूबर 2024 (1000 प्रतियाँ)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 117)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870 2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा) 3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।
(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ्ढमाण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंताद्यो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"
(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं । रतिकामं शान्तिं-शान्तिं ।
बलिकामं शान्तिं-शान्तिं । क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं ।
अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं । सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं । सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं । सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वनरमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वकर्माष्टकं- शान्तिं - शान्तिं । सर्ववेदनीयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वमोहनीयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं ।
अस्माकं अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं ।
दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं ।

सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं । परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादिकृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं । ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु । सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु । सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु । शिवमस्तु । जयोस्तु । नित्यमारोग्यमस्तु । सर्व जीव कल्याण मस्तु। दीर्घायु रस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। धन धान्य समृद्धि रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । समृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । सुखमस्तु । अभिवृद्धिरस्तु । दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु । सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु। वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय। चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय।। विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय। मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेंद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्रां णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)** अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**

7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**
8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू ह्रूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**
9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**
10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**
11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**
12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्योः नमः। **(अर्घं)**
16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।
20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।
23. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

॥इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चौंसठ ऋद्धि सिद्धि विधान माण्डला

कुल अर्घ्य 107 : प्रथम वलय में 5, द्वितिय वलय में 22, तृतीय वलय में 9, चतुर्थ वलय में 11, पंचम वलय में 8, षष्ठम वलय में 3, सप्तम वलय में 9, अष्टम वलय में 6, नवम वलय में 2, दशम वलय में 22, कुल 97, पूणार्घ्य 10 कुल 107

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

व्रतारम्भ : किसी भी माह की द्वितीय, पंचमी, अष्टमी, एकादशी एवं चतुर्दशी से प्रारम्भ

अवधि : 1 वर्ष से 4 वर्ष

व्रत पूजा : चौंसठ ऋद्धि-सिद्धि विधान पूजन आदि।

जाप : ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धि-सिद्धि धारक सर्व मुनिवरेभ्यो नम:, ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धिभ्यो नम: या चौंसठ ऋद्धि मंत्रों की क्रमश: जाप (पेज नं. 52 देखें)

व्रत विधि : 64 उपवास या एकासन या रस परित्याग

चौंसठ ऋद्धि सिद्धि विधान

स्थापना

जिनवर के लघुनन्दन मुनिवर, परिषह जयते अविकारी।
महाव्रतों की करें साधना, परमेष्ठी पद के धारी।।
ज्ञान ध्यान तप आराधन में, लीन रहे मुनि करुणाधार।
आह्वानन स्थापन करता, हृदयांगन में करो विहार।।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ति-ऋद्धि-सिद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्य: अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

श्वेत शिखर से बहता पावन, निर्मल जल जीवन धारा।
चरण कमल में त्रय धारा दे, पाऊँ सुख अक्षय सारा।।
चरण कमल मुनिराज आपका, सदाचरण सिखलाता है।
जन्म जरा मृत्यु रोगों से, सबको पार लगाता है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन वृक्ष-सा जीवन मुनि का, जो काटे सुरभित करते।
लेप लगा शीतलता पाते, अनुकम्पा अद्भुत करते।।
ऋद्धि सिद्धि धारक मुनिवर, धरती पर विहार करें।
गन्ध समर्पित चरण कमल में, मम आतम उद्धार करें।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

लंबे छोटे चावल सुन्दर, अक्षत बन मन को भाए।
धरती पर दो बार उगे वे, द्विजन्मा गुण बतलाए।।
काम भाव से जन्मा जीवन, सांसारिक कहलाता है।
धर्म ध्यान से सुलझा जीवन, अक्षय पद दर्शाता है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

मोरपँख-सा कोमल मन कर, फूलों-सा खिलता रहता।
कांटों में प्रमुदित हो करके, धैर्यवान जीवन बनता।।
मुनिराज कण्टक में रहकर, निष्कण्टक जीवन जीते।
काम कामना की कालिमा तजकर, मन सुरभित करते।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

तन मन की सब भूख मिटाकर, छोड़ा धन भोजन संसार।
निरसता में रस खोजा पर, पाया ना उसमें कुछ सार।।
मुनिराज तन संचालन को, एक बार आहार करें।
पूजा में नैवेद्य चढ़ाकर, रोग क्षुधा निस्तार करें।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

बाहर जलता दीपक जगमग, बाहर का तम हरता है।
स्याद्वाद अनेकान्त दीप जल, अन्तर तम क्षय करता है।।
मुनिराज की विनय वन्दना, मिथ्या दीप बुझाती है।
दीप समर्पित गुरु चरणों में, निज उद्योत कराती है।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

धूप जले पर धूम उड़े जो, प्रांगण को सुरभित करता।
कर्म जले तब धर्म फले वह, निज आतम प्रमुदित करता।
मुनिराज जी तप अग्नि में, कर्मन् धूप जलाते हैं।
पूजा में शुभ धूप समर्पित, अष्ट कर्म विनशाते हैं।।

ॐ ह्री भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: अष्ट कर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तप की आभा मुखमण्डल पर, मुनिराज के सहज खिले।
सफल साधना फलीभूत हो, मोक्ष महाफल सहज मिले।।
निष्फल मेरी भक्ति ना हो, भाव समर्पित मैं करता।
निजगुण फल मन प्रगटित होवें, तरुवर फल अर्पित करता।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

भावों की शुभ थाल सजाकर, निर्मल मन का जल लाया।
प्रशम भाव का चन्दन लेकर, अनुकम्पा अक्षत भाया।।
आराधन का पुष्प संजोकर, नैवेद्यम् तपधार लिया।
धर्म दीप वसु कर्म धूप ले, मोक्ष महाफल साध लिया।।
अष्ट द्रव्य का मिश्रण करके, मुनिवर चरण चढ़ाऊँगा।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि पा, महाव्रतों को ध्याऊँगा।।

ॐ ह्रीं भूत-भविष्य-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

हे महाऋषि! हे महायति!, हे महाव्रती! मुनिवर सारे।
हे महामना! हे धर्मधुरी!, हे पुण्यवान! जग हित कारे।।
हे वीतराग मुद्राधारी, हे पिच्छी कमण्डल के धारी।
हे शान्त छवि निर्ग्रन्थ मुनि, हे इन्द्रिय जेता अविकारी।।

भाव भावना बारह भाकर, सृष्टि का गुण जान लिया।
तज आडम्बर हुए दिगम्बर, मोक्ष मार्ग पहचान लिया॥
जीवन की क्षण भंगुरता लख, जीवन को जीवन्त किया।
जल से भिन्न कमलवत रहकर, निज जीवन को धन्य किया॥
आत्म तत्व की स्वर्णिम आभा, विषय भोग में क्षीण हुई।
गुप्ति समिति व्रत संयम से, कर्म कलिमा जीर्ण हुई॥
रत्नत्रय का मुख मण्डल पर, अद्‌भुत आभा चमक रही।
भेद ज्ञान की अद्‌भुत कान्ति-केशलोंच से दमक रही॥
ऋद्धि सिद्धि, धारक मुनिवर, जग उपकारी दिव्य महान।
भटके हम संसारी प्राणी, मार्ग बता कर दो कल्याण॥
जब तक जगति में जीवन है, तब तक जग में सन्त रहें।
यथाजात जिन रूप स्वरूपी, जैन सन्त जयवन्त रहें॥

दोहा

नौ करोड़ में तीन कम, जगति में मुनिराज।
श्रद्धा से वन्दन करूँ, तारण तरण जहाज॥

ॐ ह्रीं भूत-भविष्यत-वर्तमानकाल-संबंधी-सर्व-मुनिवरेभ्य: नम: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वलय

(चतुर्विंशति तीर्थंकर संबंधी गणधर एवं चतुर्विध मुनिराजों के 5 अर्घ्य)

ऋषि मुनि या यति नमो, नमो सदा अनगार।
संघ चतुर्विध मुनिवरा, धर्म मार्ग आधार॥

(प्रथम-वलय-मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

एक सहस अरुँ चार सौ बावन, गणधर वाणी को झेलें।
वृषभसेन से गौतम स्वामी, निज स्वभाव से नित खेलें॥
लाख अट्‌ठाइस श्री मुनिराजा, अढ़तालिस हज्जार कहें।
साधक तद्‌भव मुक्ति गामी, अर्घ चढ़ा भवपार करें॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-समवशरणे-विराजित-एकहज्जारचारसौ-बावन-

गणधर-एवं-अट्ठाइसलाख-अड़तालीसहजार-सर्वमुनिवरेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्धर तप तरु तल में बसकर, ग्रीष्म ऋतु पर्वत पर जाए।
शीत ऋतु में नदी समीपा, ध्यान धरे निज कर्म खपाए॥
ऐसे तपसी आत्म लीन हो, गहन साधना वास करें।
ऋद्धि प्रगट हो ऋषि कहावें, ऋषिवर तप उपवास करें॥2॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-सर्व-ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज मन मौन करावे, खोज करें नित कौन की।
वच तन की चंचलता रोकें, ध्यान करें नित ओम् की॥
बने सहारा उन भव्यों का, भक्ति से मुनिराज नमें।
विनय मोक्ष का द्वार कहाँ, जो धर्ममार्ग प्रकाश भरें॥3॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यति यतन से यातना सहकर, शुक्ल ध्यान में बढ़ते हैं।
जंगल कोटर गुफा नगर में, साधक निश दिन रहते हैं॥
बध बन्धन अपमान उपेक्षा, की ना चिन्ता करते हैं।
यति कहावें यश को पावे, मोक्ष मार्ग में बढ़ते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-सर्व-यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह आडम्बर परिग्रह तजकर, रूप दिगम्बर धार लिया।
जिन दीक्षा ले सहज साधना, जिन मारग स्वीकार किया॥
पिच्छी कमण्डल केश लोंच कर, अनगारी कहलाते हैं।
गुणमाला संसारी जन गा, सम्यग् दर्शन पाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-सर्व-अनगारेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

धत्ता— **जय ऋषिवर सारे मुनिवर प्यारे।**
यतिवर न्यारे नमन करूँ॥
जय जय अनगारा गणधर धारा।
अर्घ चढ़ा अघ शमन करूँ॥

ॐ ह्रीं ऋद्धि सिद्धि संयुक्त सर्व चतुर्विध मुनिवरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

(बुद्धि ऋद्धि के 22 अर्घ्य)

सन्मति से सद्गति मिले, सदाचरण सरताज।
बुद्धि ऋद्धि मुनिराज जी, हृदय विराजो आज॥

(द्वितीय-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

समवशरण या गंध कुटी में, चतुर्मुखी जिनराज रहें।
तीन लोक त्रय काल वस्तुएँ, अवलोकन कर जान रहे॥
चार घातियाँ कर्म विनाशे, केवल ऋद्धि पाया है।
अर्घ समर्पित चरण कमल में, भक्ति में यश गाया है॥1॥

ॐ ह्रीं केवल-बुद्धिऋद्धि-धारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोचा था या सोच रहे हैं, सोचेंगे जो भी बातें।
रूपी मन की उठी तरंगे, विपुलमति क्षण में ज्ञाते॥
ज्ञान अनन्ता आतम में है, उसकी शुद्धि है करना।
मन वश कर संयम धारण कर, अर्घ समर्पित है करना॥2॥

ॐ ह्रीं विपुलमति-मनःपर्यय-बुद्धिऋद्धि-धारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव पर प्रतिपाति है, मुनियों का मनपर्यय ज्ञान।
ऋजु बातों को ऋजु भावों से, जान रहे मुनि ज्ञान प्रमाण॥
ऋद्धि पाते प्रमत्त संयमी, आत्म ध्यान में रमण करें।
अर्घ चढ़ाकर पूजा कर लूँ, जीवन के भव भ्रमण हरें॥3॥

ॐ ह्रीं ऋजुमति-मनःपर्यय-बुद्धिऋद्धि-धारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लय-शुभ ध्यान में लवलीन हो...)

पावन चरित्र सुधारकर, जो आत्म साधना लीन हैं।
परमावधि सुज्ञान प्रगटें, सूक्ष्म ज्ञान प्रवीण हैं॥

ऐसे तपस्वी सन्त की, पूजा सदा अर्चा करें।
यश ऋद्धि सिद्धि प्राप्त कर, सद्ज्ञान की चर्चा करें।।4।।

ॐ ह्रीं परमावधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के सब बंध नाशे, धार ली दीक्षा खरी।
उपवास व्रत को पालते नित, ध्यान करते सुखभरी।।
सर्वावधि सुज्ञान प्रगटें, आत्म साधना से सदा
पूजा दिगम्बर मुनि चरण जो, दे अतुल सुख सर्वदा।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वावधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर चर्या धारकर जो, आत्म रूप में रम रहे।
वे देश अवधि ज्ञान पाकर, वस्तु ज्ञान में थम रहे।।
अर्चन सदा उनकी करूँ, निज ज्ञान दीप प्रजालने।
निज आत्मा का बोध हो, निज पर सदा संभालने।।6।।

ॐ ह्रीं देशावधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोष्ठ में जो धान्य को, रखते सदा संरक्षिता।
निज बुद्धि में झट् ऋद्धियों को, ज्ञान राखे नित्यता।।
पावन पवित्र मन की दशा से, कोष्ठ बुद्धि प्राप्त हो।
संपूर्ण द्वादशांग धारें, कर्म नाशकर आप्त हो।।7।।

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धि ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक बीज में ज्यों वृक्ष है, उसमें फले बहु बीज हैं।
एक शब्द में बहु अर्थ हैं, उसको कहे सब बीच में।
योगी सदा निज योग से, यह बीज बुद्धि पावते।
अर्चा करूँ पूजा करूँ, निज ज्ञान कोश बढ़ावतें।।8।।

ॐ ह्रीं बीजबुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद मात्र को ही जानकर सब, शास्त्र का सद् ज्ञान दें।
वह ऋद्धि पादानुसारिणी जो, स्वयं को सम्मान दें।।
पर पद बचे निज पद सजें, योगी सदा निज ध्यान में।
नित पूजकर उनको सदा, पाऊँ निरापद ज्ञान मैं।।9।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणीबुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भीड़ के शब्दों को सुनकर, भिन्न भिन्न हैं जानते।
वह ज्ञान अद्भुत त्याग से, मुनिराज भीतर झाँकते।।
ऐसे सदा ध्यानी मुनि को, ऋद्धि संभिन्न प्राप्त हों।
निज ज्ञान बुद्धि हेतु चरणों, अर्घ अर्पित आप्त हों।।10।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृ-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लय- मेरी भावना)

अपनी बुद्धि अपनी क्षमता, अपने भीतर का शुभ ज्ञान।
मति श्रुत अवधि बिन मुनिवर के, प्रगटा है जो शुद्ध महान।।
स्वयं बुद्ध ऋद्धि के धारी, मुनिवर भाग्य विधाता है।
अर्घ चढ़ाऊँ शीश नवाऊँ स्वयं बोध प्रगटाता है।।11।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भिन्न भिन्न है देह आत्मा, सर्व पदारथ भिन्न रहें।
पर को अपना माने चेतन, जग में पीड़ित खिन्न रहें।।
धारे मुद्रा परम दिगम्बर, प्रत्येक ऋद्धि प्राप्त करें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ाकर, आठों कर्म समाप्त करें।।12।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि जिनवर की खिरती, उसको सुनते धरकर ध्यान।
ज्ञान कली खिल जाती तत्क्षण, बोध बुद्धि ऋद्धि प्रगटान।।
निज बोधन संबोधन करके, मोक्ष मार्ग प्रगटाते हैं।
अर्घ चढ़ाकर उन चरणों में, अपना पाप मिटाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं बोधबुद्धि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(लय- शुभ ध्यान में...)

छूते नहीं पर वस्तु को, पर शक्ति नव योजन कहा।
जीते परस के आठ गुण, जो परस का भोजन महा।।
तन शक्ति को वे साधकर, निज मुक्ति को लाते बुला।
वे दूर पर्शन ऋद्धि धारी, पूजता मन को खिला।।14।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन-ऋद्धिधारी-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(लय- मेरी भावना)

नव योजन की शक्ति है जो, स्वाद भरे रस को जाने।
रसना को वश में रखते वे, आतम रस को पहचाने।।
दूरास्वादन ऋद्धि पाकर, ना उसका उपयोग करें।
महातपस्वी मुनिराज को, अर्घ चढ़ा भवरोग हरें।।15।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाशा दृष्टि रखकर मुनिवर, नाश करे सब बाह्य विकार।
अच्छी है या बुरी गंध है, नहीं करे वे सोच विचार।।
घ्राणेन्द्रिय की शक्ति उत्तम, नव योजन तक जान रहे।
महाविरागी मुनिराज को, अर्घ चढ़ा सम्मान करें।।16।।

ॐ ह्रीं दूरगंध-ऋद्धिप्राप्त-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधारण-सी आँखें भी तो, आठ शतक योजन देखें।
तप चक्षु के धारी मुनिवर, उससे आगे अवलोकें।।
सहस सैंतालिस दो सो तिरेसठ, योजन तक की शक्ति है।
मुनिराज की महिमा न्यारी, अर्घ समर्पित भक्ति है।।17।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यों नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यंत्र नहीं पर मंत्र शक्ति है, बारह योजन तक सुनते।
सुनने की क्षमता अद्भुत है, सुनकर ना विचलित होते।।
रोध किया सब कर्णेन्द्रिय का, तप से ऋद्धि पाई है।
अर्घ चढ़ाकर पूजा कर लूँ, भक्ति की रूत आई है।।18।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त शतक विद्यायें आकर, महाऋषि को करे प्रणाम।
मेरी विद्या को स्वीकारो, विनय करे मुनि सम्मुख आन।
मुनिराज सब विद्या तजकर, निज आतम का ध्यान करें।
दशम पूर्व ऋद्धिधारी को, पूजा कर प्रणाम करें।।19।।

ॐ ह्रीं दशपूर्व-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्त वस्तु सम सब अवलोके, ज्ञान परोक्ष प्रत्यक्ष समान।
चौदह पूरब के श्रुत ज्ञानी, जाने लोका लोक प्रमाण।।
अनजाने श्रुत ज्ञान से रहकर, शुद्ध ज्ञान का ध्यान करें।
अर्घ चढ़ाकर पूजा करलें, निज आतम कल्याण करें।।20।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशबुद्धि-ऋद्धिधारी-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग भौम स्वर स्वप्न व्यंजना, देख रहे तन के लक्षण।
शुभ अशुभ कारण को जानें, बोल रहे स्पष्ट वचन।।
है अष्टांग निमित्त ऋद्धियाँ, मुनिवर को प्रगटित होते।
इसमें ना फँसना यह सोचे, मन पावन प्रमुदित होते।।21।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त-बुद्धिऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम के ज्ञाता वागीश्वर, जीते प्रतिवादी ज्ञाता।
स्याद्वाद अनेकान्त समझकर, झुका रहा अपना माथा।।
वादित्व ऋद्धि के धारी मुनिवर, धर्म प्रभाव बढ़ाते हैं।
अर्घ चढ़ाकर उन चरणों में, भक्त सभी हर्षाते हैं।।22।।

ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धि-ऋद्धि धारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

बुद्धि ऋद्धि धारी मुनि-ज्ञानामृत बरसाय।
जिन मुनि वचना नित सुने-बुद्धि ऋद्धि प्रगटाय।।

ॐ ह्रीं केवलादि वादित्व ऋद्धि पर्यन्त सर्व ऋषिश्वरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

(चारण ऋद्धि के 9 अर्घ्य)

निर्मल परिणामी मुनि, ऋद्धि चारण पाए।
चरण नमूं चारण मुनि, पुष्पाजंलि चढ़ाए॥
(तृतीय-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

ईया पथ की सतत साधना, जीवों का ना घात करें।
जँघा चारण ऋद्धि प्राप्त कर, नहीं कभी प्रमाद करें॥
दोनों हाथों को जंघापर, रखते ही नभ चलते हैं।
मन की शुद्धि और विशुद्धि, धरकर ऋद्धि वरते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं जँघाचारण-ऋद्धिधारी-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में थल वत् कदम बढ़ाते, विस्मय आकर्षण होता।
जलचर प्राणी पिड़ित ना हो, दया धर्म दर्पण होता॥
मुनिराज की सतत साधना, ऋद्धि जल चारण देती।
अर्घ चढ़ाकर पूजन करता, भव सागर तारण होती॥2॥

ॐ ह्रीं जलचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी सम जाला बुनता मन, स्वयं स्वयं का बन्धन है।
पाप कर्म फल पाकर जग में, करता निशदिन क्रन्दन है॥
कोमल तंतु पर मुनि चलते, ना डोले ना टूट रहा।
धन्य धन्य मुनिराज साधना, अर्घ चढ़ा मन झूम रहा॥3॥

ॐ ह्रीं तंतुचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोमल कलियाँ डाली खिलती, रंग बिरंगे दृश्य लगे।
प्रातः खिलकर शाम झरे वह, जीवन का सब सत्य कहें॥
पुष्पों के ऊपर चलते पर, किञ्चित ना पीड़ा देते।
पुष्प चारण ऋद्धि धारी, की पूजा हम सब करते॥4॥

ॐ ह्रीं पुष्पचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्तों पर या पत्ते नीचे, छोटे मोटे जीव पले।
ऋद्धि धारी गमन करें पर, घात नहीं हो चरण तले॥
दयामूर्ति मुनिराज हमारे, योगीश्वर है करुणा वान।
अर्घ चढ़ाकर पूजा करता, करने आतम का कल्याण॥5॥

ॐ ह्रीं पत्रचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जीव भरे हैं, उनकी रक्षा सदा करें।
उपकारी बनकर जगति में, कर्म फर्ज मय अदा करें॥
गमन करें बीजों के ऊपर, जीव घात ना होता है।
ऋद्धि चारण बीज की जानों, भक्ति मुक्ति देता है॥6॥

ॐ ह्रीं बीजचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपशम हो या क्षपक श्रेणियाँ, साधक मुनिवर चढ़ते हैं।
कर्म दबा कर कर्म खपाकर, आत्म साधना करते हैं॥
श्रेणी चारण ऋद्धि धारक, ऋषिवर श्रेणि वत् चलते।
अर्घ चढ़ाकर पूजा कर लूँ, कर्म बेड़ी हर क्षण कटते॥7॥

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर का पथ अग्नि पथ है, इस पथ पर विरले चलते।
तप अग्नि में तपकर यतिवर, कर्म कालिमा सब दहते॥
अग्नि चारण ऋद्धि पाकर, अग्नि शिखा पर गमन करें।
बाधा किञ्चित ना वे पावें, अर्घ चढ़ाकर नमन करें॥8॥

ॐ ह्रीं अग्निचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरालंब हो गगन समाना, धीर वीर गंभीर कहें।
मुद्रा कायोत्सर्ग धरें वे, गगन गमन ज्यों तीर रहे॥

ढाई द्वीप में विचरण करते, नभ चारण ऋद्धि मुनिराज।
चरण कमल में अर्घ चढ़ाऊँ, पाने को पदवी जिनराज॥9॥

ॐ ह्रीं नभचारण-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वसन्त तिलका छंद

संसार में दुख सदा यह जीव पाता।
मन इन्द्रियां रत रहे नित भोग भाता॥
वैराग्य भाव धर कर तप धारते है।
वे ऋद्धि चारण परम पद पावते है॥

ॐ ह्रीं जंघादि नभ चारण ऋद्धि पर्यन्त सर्व मुनिवरेभ्यः नमः पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

(विक्रिया ऋद्धि के 11 अर्घ्य)

कौतुकता दर्शाती ऋद्धि, शक्ति को बतलाती है।
मुक्ति के साधक मुनिवर को, काम नहीं कुछ आती है॥
फिर भी अणिमा महिमा लघिमा, ऋद्धि को मुनि पाते हैं।
नहीं प्रयोजन ऋद्धि से रख, महामुनि कहलाते हैं॥

(चतुर्थ-वलय-मंडलस्योपरि-पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कमल कर्णिका भीतर अनुपम, सुख-पूर्वक मुनिराज रहें।
हलन चलन ना पीड़ा पहुँचे, ऋद्धि धर ऋषिराज कहें।
अणिमा ऋद्धि की शक्ति से, अणुसम तन को धार रहें।
अर्घ चढ़ाकर करें वन्दना, अणुव्रत धर उद्धार करें॥1॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु पर्वत सम काया को, क्षण में करते वृहद् विशाल।
चक्रवर्ती-सा वैभव पाकर, हो जाते कृत्य कृत्य निहाल॥

महिमा ऋद्धि की महिमा तो महाव्रती ही पाते हैं।
अर्घ चढ़ाकर महामुनियों को, महापुण्य फल पाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं महिमा-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भारी भरकम काया धारी, होते तप बल से मुनिराज।
अर्क तूल सम हल्के होते, लघिमा ऋद्धि के ऋषिराज।।
नहीं प्रयोजन बाह्य शक्ति से, फिर भी मुनिवर पाते हैं।
अर्घ चढ़ा हम भक्ति करते, अपना पुण्य बढ़ाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं लघिमा-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन से तन को कुन्दन करके, सूक्ष्म रूप में शक्ति भरी।
इन्द्र सखा बन मुनि चरणों की, वन्दन करके भक्ति करी।।
गरिमा ऋद्धि गरिमा मय कर, गुरु गरिमा को बढ़ाती है।
अर्घ चढ़ाऊँ गुरु चरणों में, सर्व दोष विनशाती है।।4।।

ॐ ह्रीं गरिमा-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र सूर्य क्या मेरू चोटी, को कर से स्पर्श करें।
धरती पर आसन से बैठें, जनमन में शुभ हर्ष भरें।।
निजानन्द में लीन मुनिश्वर, प्राप्ति में ना फँसते हैं।
प्राप्ति ऋद्धि धारी मुनिवर, अर्घ समर्पित करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमि आकाश अगन में, रूप धरे आवें जावें।
निज में निज का अवलोकन कर, व्यर्थ कार्य तजते जावें।।
निष्काम तपस्वी मुनिराज जी, विक्रिया प्राकाम्य पावें।
अर्घ चढ़ाकर भक्ति कर लूं, भावों में सु-साम्य आवें।।6।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल निश्चल निर्भय निरूपम, निज ईश्वर को जाना है।
अतिशय गुण ईशित्व ऋद्धि का, देव इन्द्र पहचाना है।
सबकी सेवा भक्ति पाकर, वैरागी मन दूर रहे।
अर्घ चढ़ाकर पूजा कर लूँ, जो कर्मो को चूर रहे॥7॥

ॐ ह्रीं ईशत्व-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन में जब फूल खिले, तो भंवरे आकर्षित होते।
परम ऋषि की परम साधना, के वश हो हर्षित होते॥
वशित्व ऋद्धि धारक मुनि की पूजन अर्चन करता हूँ।
इच्छाओं को वश में करके, सुख शान्ति को वरता हूँ॥8॥

ॐ ह्रीं वशित्व-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोहे की दीवारें हो या, ऊँचे पर्वत चट्टानें।
निराबाध ही पार करे वे, नहीं कोई बाधक मानें॥
जग में ऐसा जीवन जीना, न बाधक ना बाधा हो।
ऋद्धि अप्रतिघात शक्तिमय, अर्घ चढ़ा सुख साता हो॥9॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात-ऋद्धिधारक-सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नयन अगोचर क्षण में होते, क्षण में दृष्टि गोचर हो।
ऋद्धि अर्न्तध्यान की प्यारी, विषय वासना खोकर हो॥
ना ऋद्धि पाने की इच्छा, मुनिवर मन में रखते हैं।
व्यर्थ कल्पनाएं मिट जाए, अर्घ समर्पित करते हैं॥10॥

ॐ ह्रीं अर्न्तध्यान-ऋद्धिधारक-सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ में बहु रूप बनाकर, लोग छला करते सबको।
रूपी बनकर भव भव घूमा, रूपातीत करो हमको॥
कामरूपिणी ऋद्धि मुनि को, मन वांछित सब रूप मिले।
अर्घ चढ़ाऊँ उन मुनियों को, ऋद्धि पा जिन रूप खिले॥11॥

ॐ ह्रीं कामरूपिणी धारक सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– **अणिमा महिमा विक्रिया, काम रुपिणी रूप।**
निज स्वभाव मे लीन हैं, महामुनि जिन रूप॥

ॐ ह्रीं अणिमादि कामरुपिणी पर्यन्त सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम-वलय

(तपोतिशय ऋद्धि के 8 अर्घ्य)

तपोतिशय की साधना, शाश्वत सुख की खान।
तन पाकर जो तप करें, करें आत्म कल्याण॥

(पंचम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अनशन का क्रम बढ़ता जाता, मरण काल तक चलता है।
खेद नहीं ना शोक द्वेष है, चेहरा खूब दमकता है॥
उग्र तपस्या ऋद्धि धारी, मुनियों का गुणगान करूँ।
अर्घ चढ़ाकर भक्ति कर लूँ, निज व्रत का उत्थान करूँ॥1॥

ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप की सौरभ नित प्रति बढ़ती, नर देवा भक्ति करते।
नहीं नाम ना मान करें वें, मुक्ति की युक्ति धरते॥
दीप्त तपोनिधि मुनिराज जी, कर्म खपाते क्षण प्रति क्षण।
अर्घ चढ़ाऊँ ध्यान लगाऊँ, दिव्य साधना को वन्दन॥2॥

ॐ ह्रीं दीप्ततपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग धारकर एक दिवस में, एक बार आहार करे।
तपो साधना इतनी गहरी, नहीं कभी निहार करे॥
तप्त तपस्वी गरम तवे सम, भोजन अवशोषित करते।
अर्घ चढ़ाऊँ इन मुनियों को, धर्म ध्यान पोषित करते॥3॥

ॐ ह्रीं तप्ततपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तावलि या सिंह निष्क्रीड़ित, महातपस्वी तप तपते।
बढ़े साधना ध्यानाराधना, नहीं क्लेश किञ्चित करते।।
महायतिश्वर महायतन से, कर्मों को कृश करते हैं।
ऋद्धि महातप के धारी को, अर्घ समर्पित करते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ मास की तप्त दोपहरी, गिरी शिखर पर तपधारे।
हाड़ कँपाने वाली ठण्डक, सरवर तट निज शृंगारे।।
रिमझिम बरसे या तूफानी, वृक्ष तले तप धार लिया।
परिषह जयते घोर तपस्वी, मुनिव्रत अंगीकार किया।।5।।

ॐ ह्रीं घोरतपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन काटे या आग लगावे, गर्म सलाखों से दागे।
देव करे उपसर्ग भयंकर, सहन करे चेतन जागे।।
भेद ज्ञान का आश्रय लेकर, घोर पराक्रम ऋद्धि धरें।
निर्विकार गुणवान मुनिश्वर, अर्घ चढ़ाकर सिद्धि वरें।।6।।

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट देव के वास थान या, घोर विपिन तपधार रहें।
सागर जल सोखे पर्वत या, ग्राम नगर निस्सार करें।।
शक्ति तप बल की पाकर वें, घोर गुणों को धारा है।
तेरी महिमा मैं क्या गाऊँ, अर्घ चढ़ा सुखकारा है।।7।।

ॐ ह्रीं घोरगुणतपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम सतावें तन मन भागे, वे मन के कमजोर कहे।
सुन्दर नारी देवी लखकर, ब्रह्मचर्य व्रत घोर धरे।।
मेरू सम मन स्थिर करते, काम भाव को वश करके।
घोर ब्रह्मचारी निष्कामी, अर्घ चढ़ाऊँ कर भर के।।8।।

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचर्यतपोतिशय-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– **इन्द्रिय मन इच्छा हनि, तप धारे निर्ग्रन्थ।**
कर्म नाश प्रतिपल करें, पाने पद अरिहन्त॥

ॐ ह्रीं उग्रतपोतिशयादि अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धि पर्यन्त सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम वलय

(बलऋद्धि के 3 अर्घ्य)

मन वच तन बल पाय कर, करे धर्म के काम।
बल पर का संबल बने, अन्त मोक्ष विश्राम॥
(षष्ठम-वलय-मण्डलस्योपारि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मन की शक्ति अद्भुत अनुपम, तीन लोक भ्रमता रहता।
मन वश में कर एक मुहुरत, में सब श्रुत चिन्तन करता॥
मन बल ऋद्धि धार मुनिश्वर, द्वादशांग को जान रहे।
अर्घ चढ़ाकर पूजा करते, साक्षात प्रभु मान रहे॥1॥

ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर मात्रा पद स्वर उचरें, एक मुहुरत समय लहे।
द्वादशांग मय श्रुत वर्णन कर, मुनिवर बोले निजमय रहे॥
ऋद्धि धारी वचन बली की, महिमा अपरम्पार है।
पूजा भक्ति इनकी कर लो, मिलता जिन वच सार है॥2॥

ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

खड्गासन या पद्मासन में, वर्षों तक स्थिर रहते।
पशु पक्षी आवास बनाकर, निर्भय हो विचरण करते॥
काय बली न विचलित खेदित, आत्म ध्यान में मग्न रहे।
तन चंचलता मेटन कारण, ऋषि चरण में अर्घ चढ़ें॥3॥

ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– **बल ऋद्धि की साधना, योग निरोध कराय।**
त्रय योगो से ध्यान कर, कर्म बलि विनशाय।।

ॐ ह्रीं त्रयोबल ऋद्धि धारकाय सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्तम वलय
(औषध ऋद्धि के 9 अर्घ्य)

जड़ औषध तन रोग हर, धर्म हरे भव रोग।
पुष्पाञ्जलिं क्षेपण करूँ, चरण नमूं त्रय योग।।
(सप्तम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तन मन की कोमलता पाकर, पर काया स्पर्श करें।
रोग नशावें जोश बढ़ावे, जीवन में सब हर्ष भरें।।
मुनिवर के संस्पर्श मात्र से, सर्वरोग मिट जाता है।
आमर्शौषधि ऋद्धि धारी, सर्व जगत सुखदाता है।।1।।

ॐ ह्रीं आमर्शौषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

थूक लार खंखार आदि में, औषध के गुण किञ्चित हैं।
मंत्र साधना संयमी जीवन, से भी यह कुछ सिंचित हैं।।
महातपस्वी ऋषिराज के, तन में यह औषध होता।
परस मात्र से पुण्य योग से, सर्व रोग विगलित होता।।2।।

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक तन तप से तपता, स्वेद बूँद बाहर आता।
व्याधि पीड़ित का संस्पर्शन, सर्व रोग झट झर जाता।।
मुनियों का तप औषध जग में, सारी पीड़ा हरता है।
मुनिवर की शुभ कृपा मात्र से, जीवन सुख से भरता है।।3।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो तन की सब धातु में, औषध का गुण रहता है।
तपसी तप के बल पर उसको, औषध मय कर देता है।।
महातपस्वी का तन पाकर, मूत्र रोग का नाश करे।
मल्लौषध के ऋद्धि धारी, मम रोगों का नाश करे।।4।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रोगी काया माया पाकर, भी ना खुश रह पाता है।
सुख का कारण निरोगी तन, जग सारा बतलाता है।।
वायु मल मुनिराज का छूकर, रोगी तन स्पर्श करें।
विडोषधि की महिमा न्यारी, सर्व व्याधि संघर्ष हरें।।5।।

ॐ ह्रीं विडोषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अंग अंग से रत्नत्रय की, शुभ धाराएं बहती हैं।
पूर्ण रूप से सर्वगात को, सर्वोषधि से भरती हैं।।
कृपा मिले या परस मिले या, मन से आशीर्वाद मिले।
रोग रहित तन कामदेव सा, पाकर मन का भाव खिले।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वोषधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मांत्रिक मंत्र सहारा लेकर, सर्पादिक विष दूर करे।
मुनिराज की सहज साधना, अतिशय से भरपूर रहे।।
कराशीष या मधुर वचन से, विष निर्विषता को पाता।
अर्घ चढ़ाकर भक्ति कर लूं, ऋषिराज सब सुखदाता।।7।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषौधि-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रेम शक्ति या क्रोध शक्ति, सब इंसानों में होती है।
ऋद्धि दृष्टि विष मुनियों की, क्षण में जीवन खोती है।।
कर्म नशाने वाले मुनिवर, ना ऋद्धि प्रयोग करें।
अर्घ चढ़ा उनके चरणों में, शान्ति मय सहयोग करें।।8।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग रहित तन पावे ऐसा, किञ्चित तो उपकार करो।
पीड़ित रोगी प्राणी लखकर, दया धर्म स्वीकार करो।।
जितनी सेवा वैय्यावृति, अपने माध्यम से होवें।
उतनी अपनी बिमारी भी, अपने तन से ही खोवें।।9।।

ॐ ह्रीं दयासेवा धर्म विस्तारकाय सर्वप्राणी रोग मुक्त करणसमर्थाय सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पाँच कोटी अरू अड़सठ लाखा, सहस निन्यानवें अंक कहो।
उसमें पाँच शतक चौरासी, रोग जोड़ हर अंग अहो।।
रोगो का घर यह तन सारा, संयम से उपचार करूँ।
दान दया रोगी सेवा कर, करूणा मय व्यवहार करूँ।।

ॐ ह्रीं पाँच करोड़ अड़सठ लाख निन्यानवे हजार पाँच सौ चौरासी रोग विनाशनाय सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलय

(रस ऋद्धि के 6 अर्घ्य)

निरस मन रसमय करें, पूजा भक्ति धार।
तन्मय तपरस से भरे, शुद्धातम् विस्तार।।
(अष्टम वलय मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कर्मोदय या कारण पाकर, मन संतापित हो जाता।
क्रोधित होकर वचन उचारें, तू क्यों ना है मर जाता।।
वाणी के मुखरित होते ही, जीवन क्षण में नश जाए।
आशीर्विष भय कारी ऋद्धि, अर्घ चढ़ा समता पाए।।1।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज के क्रुद्ध नयन से, अँगारे जब झरते हैं।
सम्मुख रहने वाले प्राणी, तत्क्षण ही वे मरते हैं।।

दृष्टि विष ऋद्धि की शक्ति, महातपस्वी पाते हैं।
दया क्षमा समता धारण कर, अपना कर्म खपाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना को रूचिकर ना लगता, ऐसा भोजन कर में आए।
क्षीरश्रावी ऋद्धि की महिमा, भोजन क्षीर वत हो जाए।।
वचनों में रसमय धारा वह, जन तुष्टि कर मन हर्षाए।
वचन सुधाकर अमृत घोले, कर्ण तृप्त कर बहु सुखदाए।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावीरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस त्यागे साधक मन से, यश का ना हो नाम निशान।
रूखा सूखा भोजन कर में, रखते ही हो घृत के समान।
वचन पुष्टता घृत सम होवे, जब निर्मल वाणी बोले।
पर विश्वासघात न करते, सर्पि श्रावी ऋद्धि होले।।4।।

ॐ ह्रीं सर्पिश्रावीरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आसक्ति का भाव तजे ओर, अन्न पान छोड़ा करते।
मधुर वचन व्यवहार करे ओर, सबका मन जोड़ा करते।।
भव्य जीव मुनिराज भेषधर, मधुश्रावी ऋद्धि पाए।
कर भोजन वच मधुरिम होवे, कर्माश्रव भी रुक जाए।।5।।

ॐ ह्रीं मधुश्रावीरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पाणि पात्री मुनिवर कर में, अमृत सम आहार लगे।
बोले अमृत सम शुभ बैना, सब जन को उपहार लगे।।
मृदु स्वभावी कोमल हृदया, महाव्रती बन जाते हैं।
अमृत श्रावी ऋद्धि प्राप्त कर, परमामृत को पाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अमृत श्रावीरस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

आशीविष से अमृत श्रावी, रस ऋद्धि धारक मुनिराज।
तप बल से ऋद्धि प्रगटावे, नही प्रयोजन रसना काज॥
मुनिवर की भक्ति कर प्राणी, रोग शोक भय दूर करें।
विषयों में रस ना ले करके, ध्यान त्याग भरपूर करें॥

ॐ ह्रीं आशीर्विषादि अमृत स्रावी ऋद्धि पर्यन्त सर्व ऋद्धिश्वरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम् वलय

(अक्षीण महानस ऋद्धि के 2 अर्घ्य)

ऋद्धि महा अक्षीण की, मुनिराज के होय।
पुष्पांजलिं अर्पित करूँ, धर्म क्षीण न होय॥
(नवम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पुण्यवान श्रावक आँगन में, मुनिराज आहार करें।
चक्रवर्ती की सेना भी आ, शेष अन्न स्वीकार करें॥
फिर भी भोजन कम ना पड़ता, ऋषिराज की महिमा है।
रस अक्षीण महानस ऋद्धि, तप की अद्भुत गरिमा है॥1॥

ॐ ह्रीं आहार-अक्षीणमहानस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस आँगन मुनिराज विराजें, चार हाथ के भीतर ही।
चक्रवर्ती या इन्द्र की सेना, सुख से बैठे अन्दर ही॥
स्थान ऋद्धि अक्षीण महानस, मुनिराज जी पाते हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ चढ़ाकर, दिव्य भाव प्रगटाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं स्थान-अक्षीणमहानस-ऋद्धिधारक-सर्व-ऋषिश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा– **कर तल ग्रास प्रदान कर, पाया पुण्य अनन्त।**
घर आँगन सूना नही, जहाँ धरे पग सन्त।।

ॐ ह्रीं आहार स्थान अक्षीण महानस ऋद्धिभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम वलय
(पंचम काल के मुनिराजों के 22 अर्घ्य)

मुनिराज की वन्दना, पुण्यवान कर पाय।
मिथ्या दृष्टि जीव तो, फेर मुखों को जाय।।

(दशम-वलय-मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तीर्थंकर का सूरज जग में, मावस को निज घर पहुँचा।
मुनिवर का दीपक दर्शन कर, सारे जग का मन चहका।।
गणधर मुनिवर के दर्शन पा, माह चवालीस बीत गए।
गौतम जम्बू सुधर्मा पा, तीर्थंकर से रीत गए।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर-महावीरनिर्वाण-पश्चात-गौतम सुधमाजम्बू स्वामी-अनुबद्ध केवलीसह-सर्व-ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चौथे काल के अन्त में, वीर गए निज धाम।
गौतम जम्बू मुनि सुधर्मा, अनुबद्ध केवली नाम।।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, पंचम काल में आए।
मुनिवर की शुभ श्रृंखला, वीरांगज तक पाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर-निर्वाणोपरान्ते गौतम सुधर्माजम्बू स्वामी-अन्तिम वीरांगज-पर्यन्त-सर्व मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विष्णु नन्दिमित्र अपराजित, गोवर्धन पावन मुनिराज।
सम्पूरण श्रुत पारगामी वें, निर्मल परिणामी ऋषिराज॥
पंचम युग में महाज्ञान पा, परोक्ष केवली कहलाए।
अर्घ चढ़ाकर करूँ वन्दना, श्रुत केवली मन भाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीविष्णु-नन्दिमित्र-अपराजित-गोवर्धन-सप्तदशकमध्ये विराजित श्रुतकेवली मुनिवरेभ्योः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रबाहु तपसी महायोगी, भद्रभाव के धारी थे।
चन्द्र गुप्त के गुरुवर प्यारे, मोक्ष मार्ग अधिकारी थे॥
श्रुत केवली की पदवी पाकर, पंचम काल विहार किया।
श्रवण बेल गोला पर्वत पर, संल्लेखना स्वीकार किया॥5॥

ॐ ह्रीं त्रयदशकमध्ये श्रीभद्रबाहु-श्रुतकेवली-मुनिवरेभ्यः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि सिद्धि से परिपूरित, दशम पूर्वधारी मुनिराज।
नाम विशाखा प्रोष्टिल क्षत्रिय, श्री जय नाग सिद्धार्थ विराज॥
धृतिषेण श्री विजय मुनिशा, बुद्धिल गंगदेव यति।
धर्मसेन एकादश मुनिवर, अर्घ चढ़ावें जैनमति॥6॥

ॐ ह्रीं 183 वर्ष मध्ये दशपूर्वधारी-विशाखाचार्य-प्रोष्टिल-क्षत्रिय-जयसेन-नागसेन-सिद्धार्थ-धृतिषेण-विजय-बुद्धिल-गंगदेव-धर्मसेनादि-एकादश-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्माराधक ज्ञानी मुनिवर, ग्यारह अंग के धारी थे।
पूज्य श्री नक्षत्र नाम अरुँ, श्री जयपाल अविकारी थे॥
पाण्डव साधक श्री ध्रुवसेना, कंसाचार्य महा हितकार।
अर्घ चढ़ाकर करूँ वन्दना, बुद्धि शुद्धि निज उद्धार॥7॥

ॐ ह्रीं 123 वर्ष-मध्ये-एकादशांगधारी-श्रीनक्षत्र-जयपाल-पाण्डव-ध्रुवसेन-कंसाचार्यादि-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म ज्ञान और शुद्ध ज्ञान से, जगति का कल्याण करें।
मुनिवर हैं सुभद्र यशोभद्र, भद्रबाहु गुणगान करें।।
लोहाचार्य प्रशंसित संता, जैनमार्ग विस्तार किया।
दश नव अठ अंगों के धारी, अर्घ चढ़ा मनुहार किया।।8।।

ॐ ह्रीं 99 वर्ष-मध्ये-श्रीसुभद्र-यशोभद्र-भद्रबाहु-लोहाचार्य-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय श्री शिव अर्हददत्ता, रागद्वेष से दूर रहें।
अंग पूर्व के ज्ञाता वाग्मी, ज्ञानध्यान रसपूर रहे।।
गुणधर माघनन्दि मुनिराजा, नित्य भ्रमण होता रहता।
दर्शन पूजन चर्या भक्ति, आराधन का मन करता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विनयदत्त श्रीदत्त शिवदत्त अर्हतदत्त-गुणधर-माघनन्दि-एकदेश-अंगपूर्व-ज्ञाता-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा नगरी में संतों का, सम्मेलन था करवाया।
प्रतिक्रमण युग करवा करके, संघ भेद का यश पाया।
नन्दी वीर या पंचस्तूपा, सेनभद्र सिंह चन्द्र कहो।
वृहद् संघ के नायक मुनिवर, जैन धर्म के सन्त अहो।।10।।

ॐ ह्रीं वृहद्-संघाधिपति श्रीअर्हत्बलि-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

काल बीतते समय लगे ना, बीता छः सौ वर्ष बढ़ा।
चिन्ता जागी गुरु धरसेना, श्रुत रक्षा का भाव जगा।।
अर्हतबली से शिष्य बुलाकर, उनको सारा ज्ञान दिया।
अंगधारी आचार्य नमूं मैं, चरण कमल में अर्घ चढ़ा।।11।।

ॐ ह्रीं धरसेन अर्हत्बली आदि सर्व अंगधारी मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर प्रभु की दिव्य ध्वनि का, गणधर गुम्फित ग्रंन्थ महा।
पुष्पदन्त ने लिपिबद्ध कर, णमोकार महामंत्र कहा।।
ऋषि सभा के अधिपति बनकर, उच्चासन को पाया है।
अर्घ चढ़ाकर करूँ वन्दना, षट्खण्डागम पाया है।।12।।

ॐ ह्रीं प्रथम सूत्र ग्रंथ प्रदाता अक्षरात्मक णमोकार मंत्र लिपिबद्ध कर्ता भगवन् पुष्पदन्त चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त मुनि धरे समाधि, भूतबलि मन अकुलाया।
एक वृक्ष के दो डाली हम, सिद्धान्तों का फल पाया।।
पूर्ण किया षट्खण्डागम को, श्रुत पंचमी का पर्व चला।
पुष्पदन्त अरुँ भूतबली को, अर्घ चढ़ा मन पुष्प खिला।।13।।

ॐ ह्रीं षट्खण्डागम-पूर्णकर्ता-भगवन्-भूतबली-चरणकमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इनकी शक्ति युक्ति लखकर, लेखन क्रम आरंभ हुआ।
अंग ज्ञान से रहित मुनिश्वर, गाथा टीका सूत्र कहा।।
कुन्द कुन्द अरुँ वीरसेन ने, गाथा टीका रच डाला।
अर्घ चढ़ा मुनि ग्रंथ शृंखला, गाऊँ पावन गुणमाला।।14।।

ॐ ह्रीं कुन्दकुन्द-वीरसेनादि-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उमास्वामी पद्मनन्दी अरुँ, यतिवृषभ आचार्य हुए।
शिवकोटि वसुनन्दी नेमि, अमृतचन्द्र कई कार्य किए।।
जिन जय नय रविसेन कहें, या विद्यानन्दी श्री आचार्य।
प्रभाचन्द्र या कुमुदचन्द्र मुनि, अर्घ चढ़ा पुरण शुभ कार्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीउमास्वामी-पद्मनन्दी-यतिवृषभ-शिवकोटी-वसुनन्दी-नेमिचन्द्र-अमृतचन्द-जिनसेन-जयसेन-नयसेन-रविसेन-विद्यानन्दी-प्रभाचन्द्र-कुमुदचन्द्र आदि सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धैर्यवान अकलंक मुनिशा, न्याय शास्त्र का ज्ञान दिया।
मिथ्या मत की जड़ें काटकर, जैन धर्म विस्तार किया।।
समंतभद्र ने धर्म ध्वजा ले, पाखण्डी मद चूर किया।
मानतुंग मुनि भक्तामर रच, भक्ति भाव भरपूर दिया।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीअकलंकमुनि-समंतभद्रमुनि-मानतुंग मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन मुनि शुभचन्द्र देव ने, तप बल से सिद्धि पाई।
चरण धूलि छिड़का पत्थर पर, स्वर्ण बना विस्मित भाई।।
वादिराज ने भक्ति करके, तन का कोढ़ मिटाया है।
पूज्यपाद ने दृष्टि पाने, शान्ति भक्ति रचाया है।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीशुभचन्द्र-वादिराज-पूज्यपादादि-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमित गति योगीन्दु स्वामी, जिनवाणी रसघोल रहे।
सिंह नन्दि गुणभद्रा स्वामी, मन की गाँठें खोल रहें।।
स्वामी कार्तिकेय मुनि का, वैरागी मन पावन है।
पंचम युग के मुनिराज जी, ज्येष्ठ मास में सावन है।।18।।

ॐ ह्रीं अमितगति-योगीन्दुस्वामी-सिंहनन्दि-गुणभद्र-स्वामीकर्तिकेय मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिमार्ग की निर्मल गंगा, अविरल बहती आई है।
ग्रंथ रचे निर्ग्रन्थ रचे, अरहन्त प्रतिष्ठा कराई है।।
त्याग मार्ग पर लाखों मुनिवर, चल कर निज कल्याण किया।
अर्घ चढ़ाकर करूँ वन्दना, जैन धर्म पहचान दिया।।19।।

ॐ ह्रीं सहस्त्र-वर्ष-मध्ये-सर्व-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिकुंजर थे आदिसागर, शान्तिसागर मुनिमहान।
महावीरकीर्ति जी मुनिवर, मंत्रों के ज्ञाता विद्वान।।
विमल सिन्धु कई बात बताकर, निमित्त ज्ञानी बनकर उभरे।
पुष्पदन्त गुरुराज हमारे, चरण नमूँ जीवन सुधरे।।20।।

ॐ ह्रीं श्री आदिसागर-शान्तिसागर-महावीरकीर्ति-विमलसागर-पुष्पदन्तसागर-सर्व आचार्य गुरु चरणकमलेभ्योः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान के मुनि आचारज, उपाध्याय का वन्दन है।
मोक्ष मार्ग पर चलने वाले, सन्तों का अभिनन्दन है।।
इनके दर्शन कलिकाल में, पुण्यवान को होते हैं।
सेवा भक्ति पूजन अर्चन, करके धर्म संजोते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन-सर्व-आचार्य-उपाध्याय-साधु-परमेष्ठीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच प्रकारे मुनिवर प्यारे, पंचम गति के साधक हैं।
पंच महाव्रत धारण करते, जगति के उद्धारक हैं।।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, बहुविध भक्ति करता हूँ।
मोक्षमार्ग पर गमन करूँ मैं, यही प्रार्थना करता हूँ।।22।।

ॐ ह्रीं पुलाक-वकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातक-पंचप्रकार-सर्वमुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाअर्घ्य

घत्ता

दश अष्ट-बुद्धिऋद्धि-धारक, नव चारण ऋद्धि भव तारक।
जय सात ऋद्धि है तप बल की, जय आठ ऋद्धि औषध तल की।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह मानो, मन वच तन बल त्रय यह जानो।
रस ऋद्धि षट् अतिशय कारी, दो अक्षीण नमें सुख कारी।।
दुखमा सुखमा में ऋद्धिधर, दुखमा में होते सिद्धिधर।
ऋद्धि सिद्धि धारी ध्याऊँ, अर्घ चढ़ाकर सिद्धि पाऊँ।।

ॐ ह्रीं चतुषष्ठिः ऋद्धिसिद्धि-धारक-सर्व-ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं चतुषष्ठिः ऋद्धि सिद्धि धारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

धन्य धन्य मुनिराज हमारे, उपसर्गों को जयते हैं।
शीत ऊष्ण और क्षुधा तृषा की, बाधाएँ नित सहते हैं।।
वर्षा में तरु तल के नीचे, अपना ध्यान लगाते हैं।
ग्रीष्म ऋतु में पर्वत पर जा, अपने कर्म खपाते हैं।।
शीत ऋतु की ठण्ड भयानक, अंग अंग तन काँप रहे।

देह भिन्न चेतन्य स्वरूपी, आत्म शक्ति को भाँप रहे।।
कभी वृक्ष कोटर में जाकर, कभी गुफा में वास करें।
आतापन अभ्रावकाश कर, निज आतम प्रकाश भरें।।
श्रेष्ठ तपोनिधि ध्यान मनीषी, शान्त दिव्य संयम धारी।
धीर वीर गंभीर यतिश्वर, ऋषियों की महिमा न्यारी।।
उत्तम त्रय सहनन के धारी, दुर्धर तप निश्चल करते।
महाऋद्धि के स्वामी होकर, निर्विकार अविचल रहते।।
दुखमा सुखमा काल में ऋद्धि, दुखमा में कुछ सिद्धि है।
मुनिराज का दर्शन ही तो, सुख शान्ति समृद्धि है।।
मुनिराज की सतत साधना, आदि-वीर तक चलती है।
कर्म निर्जरा स्नातक, निर्ग्रन्थ पने तक बढ़ती है।।
अन्तिम त्रय सहनन को पाकर, बने पुलाक कुशील मुनि।
व्रत पालन कर वकुश मुनि, बन धीरे-धीरे कर्म हनि।।
वस्त्राभूषण घर परिवार, छोड़ चले करने उद्धार।
पर घर में जा चर्या करते, आत्म हितैषी करुणाधार।।
एकाशन पदयात्रा लोचन, खड्गासन कर ले आहार।
भूमि शय्या नहीं नहाना, रत्न त्रय शुद्धि आधार।।
कभी जिनालय या कुटिया में, मुनिराज स्वाध्याय करें।
धर्म ज्ञान की ज्योति जलाकर, भव्य जीव उल्लास भरे।।
समता धारें निज को निखारें, अनुकूल प्रतिकूल मिले।
पर पूजा की नहीं कामना, शूल मिले या फूल खिलें।।
चार हाथ भूमि अवलोके, जीव दया का भाव धरें।
पर पीड़ा में मक्खन सम बन, ममतामय स्वभाव करें।।
कोई हँसते कोई नमते, मुनिराज विहार करें।
कभी भवन में कभी विपिन में, साम्य भाव स्वीकार करें।।
चौथा काल सदा अनुकूला, तीर्थंकर दर्शन पाते।
साक्षात् मुक्ति ऋद्धि भी, मन श्रद्धा से भर जाते।।
पंचम काल सदा प्रतिकूला, ऋद्धि ना तीर्थंकर हैं।
शक्तिहीन तन अन्न पान बिन, कुछ समयों में अस्थिर है।।
ऐसे युग में दर्श ज्ञान धर, मुनि मुद्रा को अपनाते।

शत वर्षों की महा तपस्या, का फल वर्षों में पाते।।
अन्तर्मन में विषय वासना, बाहर लोक लाज भय राज।
फिर भी पंचम युग में देखो, भेष दिगम्बर में मुनिराज।।
पाप बैर मिथ्या तिमिर से, जिसका हृदय भरा हुआ।
चलते फिरते तीर्थ स्वरूपी, मुनिदर्शन मन नही हुआ।।
दुर्लभ जैन धरम कुल पाया, मुनिवर दर्शन पाए हैं।
उसके पद चिन्हों पर चलकर, संयम पथ अपनाए हैं।।
विषयों में रच पच कर मेरा, काल बहुत बेकार हुआ।
मुनिवर की शुभ कृपा दृष्टि से, मम जीवन उद्धार हुआ।।
मुझको संबल देकर मुनिवर, मेरा मन बल वृहद करो।
मुनि पने की करूँ साधना, मेरे मन को अर्हत करो।।

दोहा– मुनिराज की साधना, सर्व जीव सुखदाय।
'सौरभसागर' नित नमें, सम्यग्दर्शन पाय।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि-ऋद्धि-धारक-सर्व-मुनिवरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्पों की, सामग्री यह पावन है।
दीप धूप नैवेद्य फलों से, अर्घ बना मन भावन है।।
मम श्रद्धा के देव आप हो, पुष्पदन्त गुरु अविकारी।
भक्ति भाव से चरण वन्दना, करता मम मन हितकारी।।

ॐ ह्रूं गणाचार्य श्री पुष्पदंत-सागर-चरण-कमलयो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद- प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि व जाप

चौंसठ मंत्र की अपेक्षा चौंसठ व्रत करना चाहिए। व्रत के दिन उपवास उत्तम, 4-5 रस त्याग मध्यम, एक बार शुद्ध भोजन करना जघन्य विधि है। प्रत्येक माह में अष्टमी,चतुर्दशी आदि किसी भी दिन व्रत कर सकते हैं। व्रत पूर्ण कर **'चौंसठ ऋद्धि सिद्धि मंडल'** विधान करके शक्ति के अनुसार शास्त्र, उपकरण आदि मंदिर जी में रखें। अनेक प्रकार की ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करना, अनेक प्रकार के रोग, शोक, दु:ख दारिद्रय से छुटकारा पाना यह इसका फल है।

प्रत्येक व्रत का समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धिभ्यो नम:

चौंसठ ऋद्धि सम्बंधि 64 व्रतों के चौंसठ मंत्र

बुद्धि ऋद्धि के 18 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
2. ॐ ह्रीं मन: पर्ययज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
4. ॐ ह्रीं बीज बुद्धिऋद्धये नम:।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नम:।
6. ॐ ह्रीं पदारनुसारिणी बुद्धिऋद्धये नम:।
7. ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
8. ॐ ह्रीं दूरास्त्वादित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धऋद्धये नम:।

16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः।
18. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।

विक्रिया ऋद्धि के 11 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं महिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रिया ऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रिया ऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रिया ऋद्धये नमः।
10. ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रिया ऋद्धये नमः।
11. ॐ ह्रीं कामरूपणीविक्रिया ऋद्धये नमः।

चारण ऋद्धि के 9 मंत्र -

1. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः।

तपऋद्धि के 7 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दीप्ततपऋद्धये नमः।

3. ॐ ह्रीं तप्ततपऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं महातपऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं घोरतपऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्व ऋद्धये नमः।

बलऋद्धि के 3 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः।

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मलौषधिषधिऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं विप्रुषौषिधिऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सवौषधिऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः।

रसऋद्धि के 6 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

अक्षीणऋद्धि के मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के पश्चात् हुए महामुनिराजों के नाम

भगवान महावीर स्वामी के 633 वर्ष के पश्चात् आचार्य भगवनश्री पुष्पदन्त जी के द्वारा भगवान महावीर की दिव्य वाणी का लेखन प्रारंभ हुआ, इसी मध्य आचार्य भद्रबाहु के शिष्य चन्द्रगुप्त मुनिराज अन्तिम मुकुटबद्ध राजा ने दीक्षा ली एवं गुणधर मुनि अर्हत्बलि एवं माघनन्दि धरसेन मुनिराज हुए। षट्खण्डागम ग्रंथ की पूर्णता पर ग्रंथ महापूजा के रूप में जिनवाणी का महापर्व **"श्रुत पंचमी पर्व"** प्रारंभ हुआ एवं षट्खण्डागम ग्रंथ ऋषि सभा के अधिपति कहलाने वाले आचार्य भगवन पुष्पदन्त देव ने **"विसदि सूत्र"** के माध्यम से 8 भाग प्रमाण ग्रंथ लिखे एवं पूर्णता प्रदान आचार्य भूतबलि ने किया। तभी से मुनियों के लिए पिच्छी-कमण्डल उपकरण के अलावा शास्त्र को तीसरा उपकरण मानकर स्वाध्याय को नया रूप प्रदान किया गया, जो गृहस्थ के लिए कर्तव्य मुनिराज के लिए आवश्यक एवं आचार्य के लिए तप रूप माना गया। आचार्य पुष्पदन्त भूतबलि के पश्चात् इन्हीं के ग्रंथ का सहारा लेकर अनेक आचार्यों ने अनेक टीकाएँ गाथाएँ लिखीं। तो आइए जाने भगवान महावीर स्वामी के पश्चात् हुए ऋद्धि सिद्धि महामुनिराजों के नाम.....

3 अनुबद्ध केवली

1. श्री गौतम स्वामी जी	12 वर्ष
2. श्री सुधर्म स्वमी जी	12 वर्ष
3. श्री जम्बू स्वामी जी	38 वर्ष
	62 वर्ष

5 श्रुत केवली मुनिराज

1. श्री विष्णु मुनिराज जी	14 वर्ष
2. श्री नन्दिमित्र मुनिराज जी	16 वर्ष
3. श्री अपराजित मुनिराज जी	22 वर्ष
4. श्री गोवर्धन मुनिराज जी	19 वर्ष
5. श्री भद्रबाहु मुनिराज जी (प्रथम)	29 वर्ष
	100 वर्ष

11 दशपूर्वधारी मुनिराज

1. श्री विशाखाचार्य जी	10 वर्ष
2. श्री प्रोष्टिलाचार्य जी	19 वर्ष
3. श्री क्षत्रियाचार्य जी	17 वर्ष
4. श्री जयसेनाचार्य जी	21 वर्ष
5. श्री नागसेनाचार्य जी	18 वर्ष
6. श्री सिद्धार्थाचार्य जी	17 वर्ष
7. श्री धृतिषेणाचार्य जी	18 वर्ष
8. श्री विजयाचार्य जी	13 वर्ष
9. श्री बुद्धिलाचार्य जी	20 वर्ष
10. श्री गंगदेवाचार्य जी	14 वर्ष
11. श्री धर्मसेनाचार्य जी	14/16 वर्ष
	181/183 वर्ष

ग्यारह अंगधारी मुनिराज

1. श्री नक्षत्राचार्य जी	18 वर्ष
2. श्री जयपालाचार्य जी	20 वर्ष
3. श्री पांडवाचार्य जी	39 वर्ष
4. श्री ध्रुवसेनाचार्य जी	14 वर्ष
5. श्री कंसाचार्य जी	32 वर्ष
	123 वर्ष

4 आठ-नौ-दस अंगधारी मुनिराज

1. श्री सुभद्राचार्य जी	6 वर्ष
2. श्री यशोभद्राचार्य जी	18 वर्ष
3. श्री भद्रबाहु आचार्य जी(द्वि.)	23 वर्ष
4. श्री लोहाचार्य जी	52/50 वर्ष
	99/97 वर्ष

5 एक अंगधारी मुनिराज

श्री अर्हत्बली आचार्य जी	युग प्रतिक्रमण कर्ता	28
श्री माघनन्दि आचार्य जी		21
श्री धरसेनाचार्य जी	योनी प्राभृत ग्रन्थ, षट्खण्डागम ज्ञान दाता	19
श्री पुष्पदन्ताचार्य जी	ग्रंथ लेखन प्रारंभ कर्ता	30
श्री भूतबली आचार्य जी	ग्रंथ समापन कर्ता	20
		118
	कुल-	**683 वर्ष**

श्री विनयदत्ताचार्य जी

श्री शिवदत्ताचार्य जी

श्री श्रीदत्ताचार्य जी

श्री अर्हतदत्ताचार्य जी

श्री गुणधर आचार्य जी	-	कषाय पाहुड़
श्री कुन्दकुन्दाचार्य जी	-	षट्खण्डागम की परिकर्म नामक टीका, प्रवचनसारादि ग्रंथ
श्री वीरसेनाचार्य जी	-	षट्खण्डागम की टीका वृहद्व्याख्याकार निमित्त-ज्ञानी, वाग्मी आचार्य
श्री उमास्वामी जी	-	तत्त्वार्थ सूत्र कर्ता
श्री पद्मनन्दि जी	-	पंचविंशतिका ग्रंथ
श्री यतिवृषभाचार्य जी	-	तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ
श्री शिवकोटि आचार्य जी	-	भगवती आराधना
श्री वसुनन्दी आचार्य जी	-	वसुनन्दी श्रावकाचार
श्री नेमिचन्द्राचार्य जी	-	गोम्मटसार, द्रव्य संग्रह
श्री अतिमगति आचार्य जी	-	सुभाषित रत्नसंदोह, अमितगति श्रावकाचार, धर्मपरीक्षा

श्री योगीन्दुदेवाचार्य जी	–	परमात्म प्रकाश, योगसार आदि
श्री गुणभद्रस्वामी जी	–	वरांग चरित्र ग्रंथ
श्री कार्तिकेयस्वामी जी	–	कार्तिकेयानुप्रेक्षा
श्री जिनसेनाचार्य जी	–	आदिपुराण, हरिवंश पुराण
श्री जयसेनाचार्य जी	–	धर्म रत्नाकर
श्री नयसेनाचार्य जी	–	धर्मामृत
श्री रविषेणाचार्य जी	–	पद्मपुराण
श्री विद्यानन्दि आचार्य जी	–	आप्त परीक्षा कमण्डल पुष्प वृष्टि
श्री प्रभाचन्द्राचार्य जी	–	प्रमेयकमलमार्तण्ड व्याख्याता
श्री कुमुदचन्द्राचार्य जी	–	कल्याणमन्दिर स्तोत्र
श्री अकलंक देव जी	–	तत्वार्थ राजवार्त्तिक
श्री समंतभद्राचार्य जी	–	रत्नकरण्ड श्रावकाचार, स्वयंभू स्तोत्र रचनाकर्ता
श्री मानतुंगाचार्य जी	–	भक्तामर स्तोत्र रचयिता
श्री शुभचन्द्राचार्य जी	–	ज्ञानार्णव ग्रंथकर्ता चरण धुलि से स्वर्णमय पत्थर
श्री वादिराज आचार्य जी	–	एकीभाव स्तोत्र
श्री पूज्यपाद आचार्य जी	–	दशभक्ति, नेत्रज्योति का आना
श्री आदिसागराचार्य जी	–	मुनिकुंजर (अंकलीकर)
श्री शान्तिसागराचार्य जी	–	चारित्र चक्रवर्ती (दक्षिण)
श्री महावीर कीर्तिआचार्य जी	–	मंत्रवादी, अठारह भाषा ज्ञानी
श्री विमल सागराचार्य जी	–	वात्सल्य रत्नाकर निमित्त ज्ञानी
श्री पुष्पदन्त सागराचार्य जी	–	पुष्पगिरी प्रणेता, प्रखर वक्ता, कवि हृदय, आगमज्ञ मुनि, सर्वतोभद्र विहारी

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान।।
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल।।
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा।।
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार।।
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता।।

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश।।
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया।।
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम।।
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[1] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं।।
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[2] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[3] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[1], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[2] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[3] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[4] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[1] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[2] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

बेरी का उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 63 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।

तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।
सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ।।10।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,

अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,

पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥1॥
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा॥2॥
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो॥
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया॥3॥
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥4॥
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥5॥
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥6॥
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥

राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे।।7।।
दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें।।
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी।।8।।
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया।।
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ।।9।।

दोहा– अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण।।10।।

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती।।
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान।।11।।
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है।।
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा।।12।।
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो।।
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो।।13।।

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार।।14।।

धत्ता– जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा।।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।
उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम।।
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई।।
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे।।
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं।।
धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।
गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया।।
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया।।3।।

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे।।
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए।।4।।

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति।।
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है।।5।।

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है।।
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया।।6।।

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था।।
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए।।7।।

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।

भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्यगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

आरती

जय हो श्री सौरभसागर
जय हो गुरू ज्ञान दिवाकर
हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती
चन्द्रप्रभा श्रीपाल ने तुमको नाम सुरेन्द्र दीना
गुरूवर नाम सुरेंद्र दीना
पुष्पदंत ने सुरभित करके-2 सौरभसागर कीना
जग पर सुरभि लूटाने वाले जीवन महकाने वाले
हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती
राग -द्वेष को छोड़के हो गये
वीतरागी ये त्यागी - गुरूवर वीतरागी ये त्यागी
शिवपुर के महाराज बनेगे-2
मुक्ति तू बडभागी रे-ऋषिवर संयम को धरने वाले
मुक्ति को वरने वाले हम सब उतारे तेरी आरती-
हे मुनिवर हम सब उतारे तेरी आरती
सौरभाँचल सिद्धांत शतक सी हमको दे दी निधियाँ-
गुरूवर हमको दे दी निधियाँ
ध्यान लगा मूरत बतलाई -2
तीरथ कर दी नसियाँ
मनहर अतिशय दर्शाने वाले
महिमा दिखाने वाले हम सब उतारे तेरी आरती
हे मनुहर हम सब उतारे तेरी आरती
जगमग ज्योत जले तेरे दर पर भक्तों की दिवाली
तेरे भक्तों की दिवाली
जो भी माँगो सोही मिलेगा-2
कोई ना जायेगा खाली
सबकी झोली को भरने वाले
करूणा बरसाने वाले मुनिवर मेरे जसपुर वाले
हम सब उतारे तेरी आरती-
हे प्रभुवर हम सब उतारे तेरी आरती
जय हो श्री सौरभसागर
जय हो गुरू ज्ञान दिवाकर-हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्यो सहियन्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	: कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
	22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	: सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	: श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	: श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	: शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	: शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	: सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	: 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	: पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	: 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	: झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक ::

मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन
मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286

मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)
बिहारी कॉलोनी, दिल्ली

श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन
बलबीर नगर, दिल्ली

श्री संजय जैन श्रीमती रेणु जैन
108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली

श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन
गौरव जैन, खुशबू जैन
अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली

विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)
आजाद नगर, दिल्ली

श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

पवन जैन, गौरव जैन, निक्षेप जैन (शामली वाले)
महावीर ओवरसीज, दिल्ली

सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

उमेश जैन सीमा जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन
ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली

विकास जैन निधि जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन
नया बाजार, ग्वालियर

प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन
सूर्य नगर, दिल्ली

सुधीर कुमार जैन (पप्पू पान वाले),
मोनू जैन, गुणिका जैन, निष्ठा जैन,
(राजगढ़ कॉलोनी) दिल्ली

मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन
भोलानाथ नगर, दिल्ली

पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)
कृष्णा नगर, दिल्ली

श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल)
श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन
(भिण्ड वाले)

दीपक जैन (चिंकी हौजरी) सुपुत्र स्व. श्री सतीश चन्द जैन
ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली

धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन
बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली

राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज (Campio Files)
शंकर नगर, दिल्ली

श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन
हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ

पी.के. जैन, वीना जैन
स्काई टेक, मगध अपार्टमेंट, 507बी, सेक्टर-3 वैशाली, गाजियाबाद

रूबी जैन, राजीव जैन
98 सविता विहार, दिल्ली

निधि जैन, अमित जैन
सी-97, सूरजमल विहार दिल्ली

जैन महिला गोष्ठी
सदर, मेरठ

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No. : 45922900000921
A/c Name : SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank : DCB BANK LIMITED
IFSC Code : DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान पुष्पगिरी

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित 1008
श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी गंगनहर, मुरादनगर

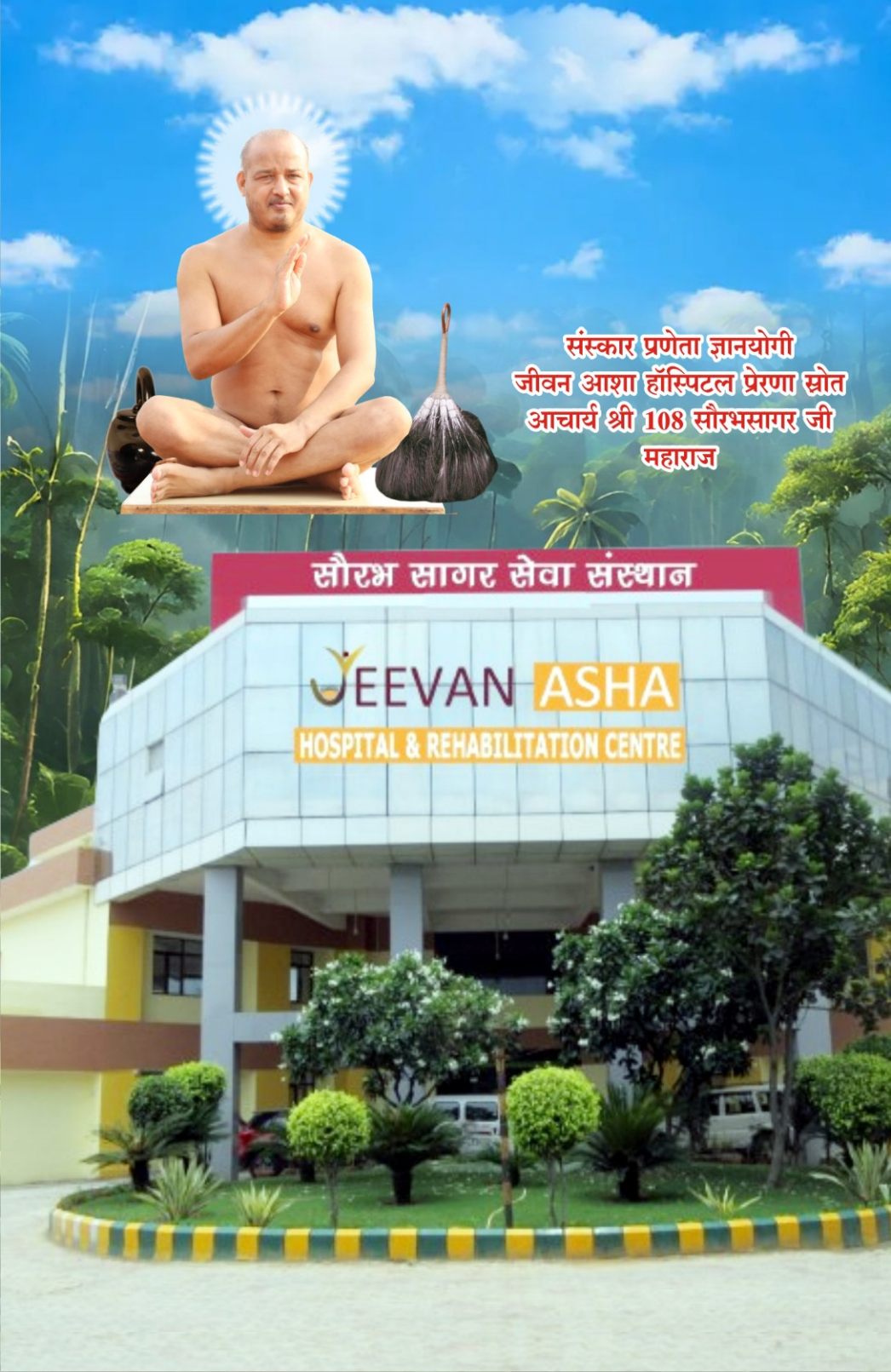
संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणा स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी
महाराज
सौरभ सागर सेवा संस्थान
JEEVAN ASHA
HOSPITAL & REHABILITATION CENTRE